साहित्यसुधा
साहित्यकारों की वेबपत्रिका
साहित्यकारों की रचना स्थली
वर्ष: 3, अंक 52, जनवरी(प्रथम) , 2019

डॉ० रिक लिंडल द्वारा रचित अँग्रेजी पुस्तक 'The Purpose' का डॉ० अनिल चड्डा द्वारा हिन्दी अनुवाद

लेखक – डॉ० रिक लिंडल
अनुवादक – डॉ० अनिल चड्डा

अध्याय 10 का अगला भाग

आवेग और अंतर्दृष्टि

वृद्ध आत्मा ने जारी रखा, "तुम्हारे बाहरी अहम और तुम्हारे अंदर की क्रियाएं, ढाँचे 2 के उन पहलुओं सहित जो उनमें सक्रिय हैं, और ऊपरी आत्मा के बीच एक निरंतर सम्पर्क बना हुआ है. यहाँ पर चेतना का बहुत बड़ा परिष्करण शामिल है. और, जैसा कि तुमने पहले देखा था, उर्जा-अभिव्यक्ति का एक निरंतर 'आवेग' भी है जो ढाँचे 2 से तुम्हारे भौतिक ब्रहमांड में आता है जिससे तुम्हारा भौतिक शरीर कायम और जीवित रहता है. एक बहुत ही बुनियादी स्तर पर यह आवेग गतिवान होने की और कार्य करने की तीव्र इच्छा प्रदान करते हैं, दोनों ही कोशिकीय स्तर और तुम्हारे शरीर के सभी स्तरों पर. वह शरीर की सामंजस्यपूर्ण कार्यशीलता को, तुम्हारी चेतन जागरूकता की आवश्यकता के बिना ही, कायम रखते हैं.

ये सारे आवेग तुम्हारी चेतन जागरूकता के निचे नहीं होते. तुम उनमें से कुछ के बारे में 'अंतर्दृष्टि' के रूप में जानते हो. तुम्हे स्मरण होगा कि मैंने तुम्हे पहले बताया था कि तुम्हारी ऊपरी-आत्मा तुम्हारी अंतर्दृष्टि के माध्यम से तुम्हारा मार्गदर्शन करती है. इन अंतर्दृष्टियों को बनाने के लिये, ऊपरी आत्मा को पहले इन्हें ढाँचे 2 में तैयार करना होगा, जो फिर तुम्हारे संसार में 'विकसित सामंजस्य' के पंखों के माध्यम से लाई जाती हैं. यह अंतर्दृष्टियाँ (उन आवेगों के साथ जो तुम्हारी चेतन जागरूकता के निचे हैं) तुम्हे संसार पर प्रभाव डालने की क्षमता प्रदान करती हैं - इनके ऊपर इनके अंदर प्रभावशाली ढंग से अमल करने के लिये. इन अंतर्दृष्टियों को बनाने के लिये अक्सर विविधतापूर्ण विचारों को एक साथ लाने का काम शामिल है, जिनका अस्तित्व ढाँचे 2 में होता है, जिनसे तुम्हारी अंतर्दृष्टियों की रचना होती है जो केवल तुम्हारे मस्तिष्क के कारण-और-परिणाम तर्क से संभव नहीं हो पाता. सारांश में, तुम यह कह सकते हो कि तुम्हारे 'आवेग' तुम्हारे जीवन को

एक ऐसी चेतना से भर देते हैं जो तुम्हारे शरीर को जीवन देते हैं और यह कि तुम्हारी 'अंतर्दृष्टि' तुम्हे संसार में कार्य करने की इच्छाशक्ति देती हैं."

"अब तुम अपने आवेगों पर प्रश्न मत उठाओ क्योंकि वह तुम्हारी चेतन जागरूकता के नीचे स्वतन्त्र रूप से संचालित होती हैं. परन्तु, तुम अपनी अंतर्दृष्टि पर प्रश्न उठा सकते हो. और तुम्हे यह करना भी चाहिये. परन्तु, जब तुम ऐसा करते हो, तो तुम्हे यह विश्वास करना चाहिये कि यह अंतर्दृष्टियां प्रकृति में निरपवाद रूप से परोपकारी होती है, क्योंकि तुम्हारी मदद के लिये तुम्हारी ऊपरी आत्मा इनकी रुपरेखा बनाती है. तुम्हे यह भी समझना चाहिये कि तुम्हारी ऊपरी आत्मा अक्सर तुम्हे भिन्न-भिन्न अंतर्दृष्टियां देगी जो असंख्य संभावित भविष्यों का प्रतिनिधित्व करती हैं जो तुम्हारे लिये उपलब्ध होंगें. इन अंतर्दृष्टियों की रूपरेखा को तुम्हे तुम्हारी वास्तविक प्रकृति की ओर ले जाने के लिये तैयार किया गया है, और तुम्हे उनमें से उनको चुनना है जो तुम्हे इस क्षण में अधिकतम आशाजनक लग रही है. इस प्रयोजन के लिये तुम्हारे पास 'स्वतंत्र इच्छा' है. जिन अंतर्दृष्टियों को तुम्हारी ऊपरी-आत्मा ने तुम्हारे लिये बनाया है कभी-कभी वह तुम्हे विपरीत लगेंगी, लेकिन वह तुम्हारे आंतरिक पहलुओं की प्रतीक हैं, और तुम्हारी जानकारी के बिना, पूरी तरह से, वह सक्रियता के लिये एक सकारात्मक स्वरूप बनाती हैं जो तुम्हे तुम्हारी तृप्ति के सबसे अधिक आशावान मार्ग और विकास की ओर ले जायेंगी."

"मैं समझ गया. और इन अंतर्दृष्टियों पर अविश्वास कब किया जाता है?"

"तब मनुष्य अपनी आंतरिक प्रकृति पर सवाल उठाता है. वह अपनी अंतर्दृष्टियों की वैधता पर भरोसा करना बंद कर देता है और वह उन्हें नकारना प्रारंभ कर देता है. अपने आंतरिक मस्तिष्क से उसका संबंध धीरे-धीरे टूट जाता है, और वह धीरे-धीरे अस्तित्ववादी निराशा को अनुभव करना प्रारम्भ कर देता है."

"अस्तित्ववादी निराशा क्यों?"

"उसका कारण यह है कि अंतर्दृष्टियों के अतिरिक्त, प्रत्येक व्यक्ति में यह महसूस करने की एक जन्मजात इच्छा भी होती है कि उसके जीवन का कोई उद्देश्य या अर्थ भी है या नहीं. उस जन्मजात इच्छा की अनुभूति अंतर्दृष्टि से होती है, और व्यक्ति को अपने जीवन स्तर, और दूसरों के जीवन स्तर को भी, बेहतर करने का कारण बनती है."

"मैं समझ गया....यह दिलचस्प है."

"यदि तुम अपनी अंतर्दृष्टियों पर भरोसा नहीं भी करते हो और अपनी आंतरिक प्रकृति से कट जाते हो, तो तुम फिर भी अपने जीवन के उद्देश्य और अर्थ की जरूरत की निरंतर अनुभूति करते रहते हो. इसलिये तब क्या होता है कि तुम इसे किसी और चीज में, या किसी और में, ढूँढने लग जाते हो. तुम इसे किसी अभिप्राय में ढूंढते हो और उन संगठनों की ओर खिंचते हो जो तुम्हारी आवश्यकता की बात करती हैं, विशेषकर वह संगठन जो तुम्हे यह बतायेंगें कि कैसे सोचना है और तुम्हे अपना जीवन कैसे जीना चाहिये. यह सामान्यतया राजनैतिक, धार्मिक, या वैज्ञानिक संस्थाएं

होती है, जिनका सभी का एक स्थापित दृष्टिकोण होता है कि तुम्हे जीवन को कैसे देखना चाहिये, और कैसे तुम्हे अस्तित्व से अर्थ और उद्देश्य के लिये संघर्ष करना है."

"मुझे यह समझ में आना शुरू हो गया है कि तुम्हारा क्या मतलब है. लेकिन क्या तुम यह सुझाव दे रहे हो कि लोगों को इस तरह की संस्थाओं और संगठनों से दूर रहने के लिये मनाया जाये?"

"मैं यह सुझाव नहीं दे रहा हूँ कि मनुष्य को विज्ञान को नष्ट कर देना चाहिये या यह कि वह धार्मिक और राजनैतिक संस्थाओं की ओर से पीठ मोड़ लें. यह संस्थापन संस्कृति के विकास के केंद्र हैं, और उनके संगठन से विशाल रचनात्मक साहसिक कार्य और खोजें संभव हो सकी हैं. जो सुझाव मैं दे रहा हूँ, और जो कुछ आवश्यकता है, वह यह है कि उन वर्तमान सिद्धांतों से, जिनका ये संस्थापन समर्थन करते हैं, घड़ी की सुई को बस एक घंटा आगे कर दो. वर्तमान सिद्धांतों से केवल एक घंटा आगे. उससे शुरुआत हो जायेगी और, अंततः, विज्ञान, धर्म, और राजनीति के निर्देशों बनाम आंतरिक ज्ञान की आस्थाओं में एक बेहतर संतुलन बनेगा."

"वर्तमान सिद्धांतों से केवल एक घंटा आगे. मुझे यह पसंद आया ! उसे संभव होना चाहिये, लेकिन मुझे शक है कि यह मेरे जीवनकाल में होगा."

जिसकी भी आवश्यकता है वह यह है कि घड़ी की सुई को वर्तमान
सिद्धांतों से केवल एक घंटा आगे कर दो.

"कभी-कभी इन संगठनों के शीर्ष पर करिश्माई नेता होते हैं, जो एक 'आदर्श' के पीछे होते हैं, एक पूर्णता जिसे वह पाने की आशा करते हैं. ये नेता निराश होते हैं क्योंकि उनका अपनी अंतर्दृष्टि से सम्पर्क टूट जाता है, और वह अपने जीवन में व्यवस्था और अर्थ पाने के लिये अस्तित्ववादी भय से संचालित होते हैं. यह नेता उनके जैसे खोये हुए और डरे हुए लोगों से समर्थन प्राप्त कर लेते हैं जो उनके कारण की ओर आकर्षित होते हैं. और, सामूहिक रूप से, अपने सांझे 'आदर्श' के साथ यह व्यक्ति, संस्थाओं और संगठनों के नेताओं के साथ और अपने आदर्श के पीछे, अपने लक्ष्य को पाने के लिये 'कोई भी आवश्यक तरीका' अपनाना शुरू कर देते हैं. और, ऐसा करने में, पाप कर्म करने के लिये दरवाजे खोल दिये जाते हैं."

"ठीक है, अब मैं समझ गया तुम कहाँ जा रहे हो."

कृपया रचनाकार को मेल भेज कर अपने विचारों से अवगत करायें